Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

महिला आत्मकथाकारों का हिंदी आत्मकथा साहित्य में योगदान

प्रा. डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं संशोधन केंद्र श्री. शिवाजी विद्या प्रसारक संस्था का. ना. स. पाटील साहित्य एवं मु. फि. मु. अ. वाणिज्य महाविद्यालय, देवपुर, धुले

प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी संचार-क्रांति की तेज़ बयार में जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित कर रही है, जिसने व्यक्ति को सोचने एवं गढ़ने के लिए नई जमीन दी तथा बहुआयामी परिवेश का सृजन किया। इस सृजन ने साहित्य में भी नए-नए प्रयोग एवं विधाओं को नूतन आयाम दिया। इसमें से एक आयाम आत्मकथा के लिए भी प्रशस्त हुआ। साहित्य में आत्मकथाओं की लाइन-सी लग गई। अपने आपको संपूर्णता में व्यक्त कर देने की ललक ने स्त्री की लेखनी को भी इस दिशा में प्रवृत्त किया और 'स्त्री-आत्मकथाएँ' इस सदी में चर्चा का विषय बन बैठीं। अपने जीवन को रहस्यात्मक गोपनीयता को पाठक मनोयोग से पढ़े, इसी मानसिकता ने आत्मकथाओं के लेखन को फैशन के बतौर चला दिया। इस शोधलेख में प्रभा खेतान, चन्द्रकिरण सोनरेक्सा, मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथाओं का कुछ कथ्य लेकर उसमें सामाजिक सच और स्त्री का यथार्थ परखने की कोशिश की गई है।

संबोध शब्द - तेज़ बयार, नूतन आयाम, सृजन, स्त्री-आत्मकथाएँ, मानसिकता, गोपनीयता, दुर्व्यवहार, लोकप्रियता, परिष्कृत, पारदर्शी, सामाजिक सरोकार।

विषय प्रवेश

साहित्य के इतिहास में 'आत्मकथा' नई विधा नहीं है। पुरुषों के साथ-साथ स्वों आत्मकथाएँ भी आती रही हैं। पिछले दो दशकों से हिंदी आत्मकथाएँ चर्चा का विषय बन रही हैं। इनमें भी स्त्री की आत्मकथाएँ अपने कथ्य और प्रस्तुतीकरण को लेकर कुछ अधिक ही चर्चित हुई। नैतिकता के तकाजे के चलते लेखकों ने अपने संबंधों के कृष्णपक्ष का खुला चित्रण साहित्य में नहीं किया था। पर अब तो यह चलन में आ गया है कि अपने कृष्णपक्ष अर्थात् कमजोरियों व अपने साथ हुए दुर्व्यवहार को ताम-झाम के साथ प्रस्तुत किया जाए। तथाकथित 'बोल्डनेस' का ठप्पा पाकर आज का लेखक खुश है। इसी के चलते स्त्री-आत्मकथाओं ने बेबाकी से अपनी बात रखी है। स्त्री के इस साहस ने उसकी आत्मकथाओं की प्रसिद्धि को परवान चढ़ाया। भले ही वह पाठकों की परिष्कृत या अपरिष्कृत रुचि का विषय हो पर उसने लोकप्रियता तो पाई। लोकप्रियता के कारण ही भद्र साहित्यकारों ने स्त्री आत्मकथाकारों पर लांछन लगाया।

महिला द्वारा आत्मकथा लिखने की शुरुआत

महिला द्वारा आत्मकथा लिखने की शुरुआत जानकीदेवी बजाज द्वारा 'मेरी जीवन-यात्रा' से मानी गई है। इस यात्रा में महिला कथाकारों की भी आत्मकथाएँ जुड़ती रहीं, जिनमें कुछ सो महज उत्कंठा जगाती हैं और कुछ सामाजिक सरोकारों से रहित जीवंत दस्तावेज बनकर रह गई हैं। यद्यपि सब इसी तरह नहीं, कुछ आत्मकथाएँ प्रश्नचिह्न भी लगाती हैं। समाज को कटघरे में खड़ा भी करती हैं, क्योंकि लेखक को अपने जीवन को एक पारदर्शी आईने के समान साफ़ रखना पड़ता है। इतना साहस हर लेखक में नहीं होता है। खासकर अगर स्त्री आत्मकथाकारों को बात की जाए, तो उनकी आत्मकथा को धमाके के रूप में देखा जाता

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

है। लेखिकाओं को आत्मकथाएँ उँगलियों पर गिनी जा सकती हैं। इस परंपरा में दिनेशनंदिनी डालमिया, शिवरानी देवी प्रेमचंद ने स्वयं की पीड़ा व त्रासदी को उजागर किया। बहुत कम लेखिकाएँ हैं, जिन्होंने अपने जीवन के रहस्यों को साहस के साथ सामने रखा। हमारे पुरुष प्रधान समाज में लेखिकाओं की आत्मकथाएँ, लेखकों की आत्मकथाओं की अपेक्षा अधिक चौंकाती हैं, इन्हें पढ़ने वाले कुछ क्षण सोचने को मजबूर कर देते है कि 'क्या ऐसा भी हो सकता है?''[1]

प्रभा खेतान

प्रभा खेतान ने अपनी आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' में समाज के प्रति विद्रोह के स्वर मुखरित किए हैं। इसके साथ ही स्त्री-पुरुष में समानता की माँग पर जोर दिया है तथा इन्होंने अपनी जीवन-परिस्थितियों के माध्यम से संपूर्ण नारी-स्थिति की समस्याओं को उजागर करने का प्रयास भी किया है। प्रभा खेतान, सीमोन द बोउवार (स्त्री उपेक्षिता) से प्रभावित रही हैं। उनका जीवन भी कुछ उसी तरह पुरुष के साथ बिना विवाह किए, एक लंबे संघर्ष की दास्तान है। यद्यपि सीमोन द बोउवार और कामू ने अपने-अपने स्वतंत्र विचारों के साथ लिव इन रिलेशनशिप में जीवनव्यतीत किया, कहीं कुछ टकराव नहीं हुआ। पर प्रभा खेतान मारवाड़ी परिवार और भारतीय संस्कृति से बंधी थीं। उनका एक विवाहित पुरुष के साथ अपनी इच्छानुसार अपने संबंधों को निभा ले जाना एकतरफा जीवन का निर्वाह था, जिसका उल्लेख प्रभाजी ने अपनी दाई माँ से किया था 'दाई माँ! अब मैं कभी विधिवत् विवाह नहीं करूंगी, मैं बिना विवाह के आजीवन किसी विवाहित पुरुष से बँध चुकी हूँ। दाई माँ, अब तुम्हारे दरवाजे कोई बारात लेकर नहीं आएगा, वह सपना खतम हो चुका है हमेशा-हमेशा के लिए।"[2]

चंद्रकिरण सोनरेक्सा

चंद्रकिरण सोनरेक्सा ने अपनी आत्मकथा 'पिंजरे की मैना' में अपने सांसारिक जीवन के उतार-चढ़ाव एवं अनुभव पर प्रकाश डालते हुए अपने अस्तित्व को खोजने का प्रयास किया है तथा समाज को नई दृष्टि प्रदान की है। इन्होंने अपनी आत्मकथा के नाम को चरितार्थ करते हुए 'पिंजर' अर्थात् घर-परिवार में ही अपने संसार को ढूँढने की कोशिश की है। इनका लेखन मध्यमवर्गीय समाज की समस्याओं व विषमताओं को इंगित करता है। इनका मानना है कि 'जीवनयात्रा आत्मकथा' समाज के लिए तभी उपयोगी होगी, जब उस यात्रा-कथा में पाठक को, समाज या युग या मनुष्य का वर्णन समय और वास्तविक रूप से प्रतिबिंबित मिले। उसे पढ़कर पाठक उन बुराइयों के प्रति सचेत हो, जो समाज को पिछड़ापन देती है।''[3] इनकी आत्मकथा 'पिंजरे की मैना' इनके छियासी साल की जीवन-यात्रा का वास्तविक दस्तावेज़ है।

'पिंजरे की मैना' शीर्षक एक चित्र उपस्थित करती है, एक गुलाम स्त्री का। यद्यपि आत्मकथा में चंद्रकिरण एक गुलाम स्त्री के रूप में नहीं उभरतीं, परंतु यह भी सच है कि उन्होंने पूरा जीवन अपने परिवार को सुखी बनाने और उसे चलाने में समर्पित कर दिया। मानसिक रूप से त्रस्त होने के बाद भी उन्होंने स्त्री की एक ऐसी छवि निर्मित की, जो सृजन में विश्वास करती है। यह सृजन उसे एक जुझारु एवं कर्त्तव्यनिष्ठ स्त्री के रूप में खड़ा करता है। एक स्त्री जिसका पत्ति उसे तथा उसके बच्चों को जलील करता है, फिर भी वह परिवार के लिए संघर्ष करती है। अपने लेखन को आगे बढ़ाने के लिए जब ये 'हंस' (उस समय के) संपादक श्री अमृराय जी को एक कहानी भेजती है, तब उसके प्रत्युत्तर में अमृराय जी का सादा-सा एक पत्र आता है, तो इस पत्र को लेकर उनके पति (काति जी) द्वारा अच्छा-खासा बवाल मचाया जाता है और वे इस पत्र के संदर्भ में कहते हैं-'ये साले संपादक भी लड़कियों को बड़े मीठे-मीठे पत्र लिखते हैं। अभी कोई पुरुष लेखक अपनी रचना

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

भेजता तो उत्तर ही पंद्रह दिन बाद मिलता या मिलता ही नहीं। इस तरह से एक साधारण-सा प्रशंसा-पत्र इनकी गृहस्थी के बीच एक घिनौनी गाली बनकर खड़ा हो गया और अंधविश्वास की धुंध में इनका दम घुटने लगा। परंतु इन सबके बीच भी इन्होंने अपने साहस से भारतीय स्त्री की भूमिका बखूबी निभाई।

मन्नू भंडारी

सन् 2008 में प्रकाशित हुई 'एक कहानी यह भी' को मन्नू भंडारी ने अपनी संपूर्ण आत्मकथा कतई नहीं माना है, उनका मानना है, कि 'जिस तरह कहानी जिंदगी का एक अंश मात्र होती है, उसी तरह यह आत्मकथा उनकी जिंदगी का एक टुकड़ा मात्र ही है, जो उनके लेखकीय व्यक्तित्व एवं लेखन-यात्रा पर केंद्रित है। इस आत्मकथा के माध्यम से उन्होंने अपनी पीड़ा, संवेदनाओं, भावनाओं, त्रासदी, संबंधों को बहुत ही सहजता एवं बेबाकी से व्यक्त किया है। इन्होंने अपने जीवन के यथार्थ को कई चुनौतियों के साथ स्वीकार किया है तथा जीवन के हर मोड़ पर समाज से टक्कर लेने की शक्ति जुटाई। उन्होंने निर्दोष होते हुए भी, एक भारतीय स्वी की तरह सहनशीलता का परिचय देते हुए, जीवन के पैंतीस वर्षों तक पति द्वारा दी गई, मानसिक एवं भावनात्मक प्रताड़ना को हँसते-हँसते झेला, केवल इसी आशा में, कि कभी-न-कभी वह अपने पति ख्यात लेखक राजेंद्र यादव के स्वभाव को बदल पाएँगी। लेकिन उनके सारे सपने यथार्थ के धरातल पर टूट गए और मन्नू जी, अपने पति राजेंद्र यादव के मीता से संबंधों के कारण अलग हो गईं। तब स्वयं राजेंद्र जी ने निर्मला जी को कहा- 'ऐसा नहीं कि इस बात पर मैंने सोचा नहीं... बहुत गंभीरता से सोचा है और बहुत दिनों तक सोचा है, लेकिन हमेशा इसी नतीजे पर पहुंचा हूँ कि साथ रहना निभेगा नहीं? मन्नू की बात छोड़िए, मीता को तो मेरा टिंकू तक से बात करना भी बर्दाश्त नहीं होगा।"[4] सचमुच संकट तो भारी होगा राजेंद्र के सामने..... टिंकू तो खैर बेटी है, पर फिर राजेंद्र की उस (बकौल ममता कालिया) घाघरा पलटन का क्या होता है? जीवन की विषम परिस्थितियों के बावजूद मन्नू जी ने अपनी सकारात्मक सोच के परिणामस्वरूप जीने की चाह और महान उपलब्धियों के लिए ललकता, आस-पास का साहित्यिक वातावरण, ऐसे कई विरोधाभासों के बीच से गुजरते हुए, अगर कुछ टूटने नहीं दिया, तो वह है उनकी जिजीविषा, सादगी और रचना संकल्प। इसी रचनात्मक शक्ति ने उन्हें एक स्थाई संबल प्रदान किया, जिसने पैंतीस साल के अकेलेपन को भरने में मन्नू की सहायता की।

मन्नू भंडारी शिक्षित महिला हैं, जिन्होंने साहित्य के क्षेत्र में काफ़ी नाम और प्रसिद्धि पाई है। उनका मानना है कि 'लेखन एक अनवरत यात्रा है, जिसका न कोई अंत है न मंजिल, लेकिन फिर भी उन्होंने स्वयं को अपने पति से कम ही माना है। अपनी आत्मकथा में उन्होंने स्वयं को हीनग्रथि से ग्रसित माना, लेकिन उनकी प्रतिभा को देखकर यह बात नहीं मानी जा सकती, क्योंकि विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने अस्तित्व को कायम रखा। मन्नूजी ने अपनी सकारात्मक सोच, बुलंद हौसलों की बनिस्बत अपने अंदर के लेखक को हमेशा जिंदा रखा और इसी सकारात्मक सोच की बदौलत उनका लेखन कार्य आज तक जारी है। वैसे भी मन्नू जी का मानना है कि 'संघर्षपूर्ण व समस्याग्रस्त जीवन ही लिखने के लिए अनिवार्य शर्त है।"[5]

यह आत्मकथात्मक एक तरह से राजेंद्र यादव की आत्मकथा का जवाब भी माना जा सकता है और मन्नू जी का अपने पति के प्रति विरोध भी, जिसमें उन्होंने अपने जीवन की अंतः पीड़ा तथा टूटे-बिखरे सूत्रों और कटु अनुभवों को समेटने का प्रयास किया है। एक ख्यातनाम लेखक की जीवन-संगिनी होने का रोमांच और एक जिद्दी पति की पत्नी होने का अवसाद, एक तरफ अपनी लेखकीय जरूरतें और दूसरी तरफ अपनी गृहस्थी सँभालने का बोझिल दायित्व, उपलब्धियों को पाने की ललक और अपने आस-पास का साहित्यिक

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

वातावरण ऐसे कई विरोधाभासों और विषमताओं के बीच से गुजरते हुए मन्नू जी ने अगर कुछ नहीं टूटने दिया तो वह है उनकी सादगी, इंसानियत और रचना संकल्प।

मैत्रेयी पुष्पा

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने जीवन पर आधारित तीन आत्मकथात्मक उपन्यासों की रचना की है, पहला उपन्यास 'कस्तूरी कुंडल बसै', मैत्रेयी व उनकी माँ की जीवन-कथा है, जिसमें मैत्रेयी की बाल्यावस्था और उनके जन्म के पहले घटित घटनाओं का वर्णन है, दूसरा और तीसरा उपन्यास क्रमशः 'झूलानट' व 'गुड़िया भीतर गुड़िया' में मैत्रेयी ने समाज के एक सभ्य चेहरे के पीछे छिपे विकृत स्वरूप को बड़ी ही जीवंतता के साथ उजागर किया है। इन्होंने गाँव से लेकर महानगरों तक के जीवन को अपने उपन्यास में चित्रित किया है। उनका मानना था कि 'पुरुषस्य भाग्यं, त्रियाचरित्रं... किमऽपि न जानाति अर्थात् पुरुष के भाग्य और स्त्री को कोई नहीं जान सकता। इन्होंने अपने सच को, संबंधों को, भावनाओं को खुलकर बड़ी ही सच्चाई के साथ शामिल किया है। अपने शंकालु पति द्वारा दी जाने वाली अवहेलना को भी उन्होंने अपनी आत्मकथा में प्रदर्शित किया है-' सुनो कि लोग कह रहे हैं, मिसेस शर्मा को डॉ. शर्मा नहीं भा रहे हैं, लोग, लोग कह रहे हैं, मिसेस शर्मा को डॉ. सिद्धार्थ को डुगडुगी की तरह नचा...'।"[6] मैत्रेयी का यह भी मानना है कि स्त्री भी एक इंसान होती है। स्त्री अपने जीवन को अपने ढंग से जीना चाहती है, मुस्कुराना चाहती है, खिलखिलाना चाहती है और प्रेम करना चाहती है। विडंबना यही है कि उसे अपनी इस चाहत के बदले लांछन व बेडियाँ मिलती हैं।

मैत्रेयी के लेखन में स्त्री के साथ किए जाने वाले भेदभाव की पीड़ा और छटपटाहट दिखाई देती है। उनकी आत्मकथा पुरुष-प्रधान समाज पर तीखा प्रहार करने का साहस रखती है। इनकी आत्मकथा को पढ़ना स्त्री-जीवन में गुज्जरने जैसा है। इन्होंने अपने जीवन के उन पक्षों को सामने रखा, जिनके बारे में आम पाठक सोच भी नहीं सकता था, कि किस संघर्ष से गुजरकर वे ऊँचाई तक पहुँच पाईं।

कृष्णा अग्निहोत्री

इन सबसे परे बीसवीं सदी के अंतिम दशक में आते-आते हिंदी साहित्य में बहुत परिवर्तन आया। इसके पीछे नारी की शिक्षा-दीक्षा व बदली हुई संस्कृति रही है, जिसमें अपने बोल्ड लेखन के जरिए लेखिकाओं ने अपनी मर्यादा की दहलीज लाँधने का भी साहस किया है, जिसमें कृष्णा अग्निहोत्री का नाम उल्लेखनीय है। वैसे तो इनके सुख-दुख मैत्रेयी से अलग हैं, लेकिन कहीं-कहीं इनके अनुभव एक जैसे हैं, जो भावनात्मक शोषण के है। कई लोगों ने इनकी आत्मकथा का स्वागत नहीं किया। उनके अनुसार 'लगता नहीं है दिल मेरा' और 'और... और औरत' आक्षेपों का चिठ्ठा मात्र है, लेकिन किसी के जीवन में इस तरह के ही प्रसंग घटित हुए तो उसे कैसे नकारा जा सकता है। हर व्यक्ति का जीवन एक-सा नहीं होता।

कृष्णा अग्निहोत्री ने अपनी आत्मकथा में अपने अंतः संबंधों को, भावनाओं, संवेगों तथा पारिवारिक रिश्तों में आई कड़वाहट को बड़ी ही बेबाकी और साफगोई के साथ उजागर किया है। इनके लेखन को बोल्ड लेखन के नाम से जाना जाता है। कुल मिलाकर इन्होंने अपनी आत्मकथा में अपनी दैनिक जीवन की चर्चाओं का वर्णन किया है, जिसमें वैयक्तिकता हावी है। इन्होंने अपनी आत्मकथा में अपनी जीवन-यात्रा को पूर्ण ईमानदारी से प्रस्तुत किया है। अपनी आत्मकथा के प्रारंभ में ही उनका कथन है कि 'मेरा बयान... नंगा रहे... एकदम प्राकृतिक.... साफा' इनकी आत्मकथा अपने आस-पास के व्यक्तिगत अनुभव का लेखा-जोखा है।[7] यह

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

लेखा-जोखा निजता के कारण सामाजिकता के दर्पण में अपनी छवि धुंधला लेता है। कृष्णाजी परिवार के बाहर अपना संसार खोजती हैं, जो इनके लिए अधूरा स्वप्न बनकर रह जाता है।

निष्कर्ष

1. हिंदी में जितनी भी विधाएँ है, उनमें आत्मकथा, साहित्य की सबसे गंभीर विधा मानी जाती है, क्योंकि इसमें लेखक अपने जीवन की सच्चाई, घटित घटनाओं, संबंधों तथा अनुभवों की पर्त-दर-पर्त खोलकर पूरी ईमानदारी के साथ अपने लेखन में शामिल करता है और तभी उसकी आत्मकथा को ठोस धरातल मिल पाता है।
2. समकालीन महिला आत्मकथाओं ने अपने आत्मकथात्मक साहित्य के जरिए स्त्री की दुनिया को भीतरी बाहरी सभी तकलीफों को, छटपटाहटों को अभिव्यक्ति दी है तथा स्त्री के संदर्भ में नई सोच परिलक्षित करने की कोशिश की है।
3. यद्यपि महिला आत्मकथाकारों ने अपने जायज नाजायज संबंधों को अधिक उजागर कर देने से उनकी आत्मकथाएँ अधिक प्रसिद्धि पा गई है।
4. महिला लेखिकाओं की आत्मकथाएँ पढ़कर युगीन पाठक मनोहर, सत्यकथाओं की तरफ लौट रहा है। यदि यही प्रवृत्ति साहित्य में घुसपैठ करती रही तो आत्मकथा गंभीर विधा नहीं रह जाएगी, लेकिन फिर भी कुछ आत्मकथाएँ आशा जगाती हैं। इनमें परिवार-समाज एक नई दिशा पाता है तथा स्त्री अपने अधिकारों के प्रति जाग्रत व सतर्क होकर, विकास-पथ पर आगे बढ़ पाती है।
5. आत्मकथा की शैली 'जो जैसा है, वैसे ही' की रहती है। इसीलिए लेखिकाओं द्वारा अपनी आत्मकथा का प्रकाशन कराए जाने पर अच्छा-खासा बवाल मच जाता है। अनेक प्रश्न उठ खड़े होते हैं कि उन्हें क्या लिखना चाहिए था और क्या नहीं? क्योंकि वह एक स्त्री है।
6. महिला कथाकारों ने आत्मकथाओं के जरिए, अपने जीवन के गोपन पक्षों को सार्वजनिक किया है। पाठकों को उन कक्षों में प्रवेश की अनुमति दी है, जिसमें रहकर उन्होंने अपने सुख-दुख और खट्टे-मीठे अनुभवों को जीआ है तथा निजी जीवन को सार्वजनिक किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. हंस, सितंबर 2010, जुलाई 2010, पृ. क्र. 91
2. खेतान डॉ. प्रभा, अन्या से अनन्या, राजकमल प्रकाशन, नईदिल्ली, संस्करण 2007, पृ. क्र. 90,
3. सोनरेक्सा चंद्रकिरण, पिंजरे की मैना, आत्मकथ्य (भूमिका), पूर्वोदय प्रकाश, नईदिल्ली, संस्करण 2010, पृ. क्र. 220,
4. भंडारी मन्नू, एक कहानी यह भी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नईदिल्ली, संस्करण 2009, पृ. क्र. 8
5. अग्निहोत्री कृष्णा, लगता नहीं दिल मेरा, सामायिक बुक्स, नई दिल्ली, संस्करण 2010, पृ. क्र. 1,
6. मैत्रेयी पुष्पा, गुड़िया भीतर गुड़िया, राजकमल प्रकाशन, नईदिल्ली, संस्करण 2009, पृ. क्र. 9
7. केडिया कुसुमलता, स्त्रीत्व धारणाएँ एवं यथार्थ, पृ. क्र. 65

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved